International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 367-368

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों कि शिक्षा में सामाजिक बाधाओं का तुलनात्मक अध्ययन

प्राची गुप्ता

रामा इन्स्टीट्यूट औफ हायर एजुकेशन, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

शिक्षा समन्वय जीवन का एक सुसंस्कृत एवम महत्वपूर्ण पक्ष है. शिक्षा के कारण ही मानव जाति आज सभ्यता और संस्कृति के उच्च शिखर पर पहुंचनेमेंसफल हुई है. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्र के समक्ष उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं मैं से शिक्षा प्रचार की समस्या ने राष्ट्र वासियों के ध्यान को सर्वाधिक आकर्षित किया. शिक्षा को प्राचीन काल से ही सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विकास, आर्थिक उन्नति और राजनैतिक चेतना के लिये सर्वोत्तम साधना माना जाता है. राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिये शिक्षा को ही प्रधानता दी गयी है.

लेकिन इसके बावजूद राष्ट्र सर्व व्यापी साक्षरता केलक्ष्य से अभी बहुत दूर है. वैसे तो शिक्षा के क्षेत्र मैं अनेक कारक हैं जो इनकी उन्नति में बाधा पहुंचाने का प्रयास करते रेहते हैं. जैसे मनोवैज्ञानिक कारक, भावनात्मककारक, शारिरिक कारक, आर्थिक कारक, पारिवारिककारक, सामाजिक कारक आदि. प्रस्तुत अध्ययन द्वारा केवल सामाजिक कारक को ही लिया गया है ताकि इन बाधाओं को दूर करकेशिक्षा मैं अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या को दूर कर शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके.

समस्या का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित उद्देश्योकी पूर्ती हेतु किया गया है:-

- छात्र एवं छात्राओकी शिक्षा में होने वाली सामाजिक बाधाओं का तुल्नात्मक अधय्यन.
- नगरीय क्षेत्र के विद्यर्थियों की शिक्षामें सामाजिक बाधाओं का लिंग के आधार पर अधय्यन

परिकल्पना

- विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा पर आर्थिक समस्या का प्रभाव नही पढ़ता है.
- विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा पर स्वास्थ्य समस्या का प्रभाव नहीपढ़ता है.
- विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा पर शैक्षिक समस्या का प्रभाव नहीपढ़ता है.
- विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा पर पाठ्यक्रम समस्या का प्रभाव नहीपढ़ता है.
- विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों की शिक्षा पर विद्यालय सम्बंधित समस्या का प्रभाव नही पढ़ता है.
- विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों र्थियो की शिक्षा पर प्रतिकूल परिवेश का प्रभाव नही पढ़ता है.

सीमांकन

इस समस्या के अनुरूप केवल वर्णात्मक सर्वेक्षणविधि ही प्रयोग मैं लायी गयी है. अध्ययन का समस्त कार्य क्रम बद्ध ढ़ंग से विधि पूर्वक व्यवस्थित किया गया है. अध्ययन के लिये आंकडों का संकलन केवल बिजनोर जनपद के 11 माध्यमिक विद्यालय से ही किया गया है. इस अध्ययन के लिये 8 नगरीय एवं 3 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयओं का ही चुनाव किया गया और केवल माध्यमिक स्तर (शिक्षा 11 और 12) तक ही सीमित रखा गया. शोध्कर्ता ने अपने अध्ययन के लिये केवल 120 अनुसूचित जाति के छात्र एवम छत्राओ को ही न्यायदर्शके रूप मेंचुना है. अध्ययन के लिये समय की न्यूनता को ध्यान मैं रख्ते हुए बिजनोर जनपद के समस्त ग्रामीण एवं नगरीय छात्र छात्राओं को माध्यमिक स्तर के 11 विद्यालयों मैं से "अनुसूचित जाति" के 120 छात्र छात्राओ का चुनाव किया गया.

अध्ययन के उपकरण

- व्यक्तिगत प्रदत्त अनुसूची: इस का उपयोगविद्यार्थियो की शिक्षा तथा उनकी पृष्ठभूमि से सम्बंधित सूचना को एकत्रित करने के लिये किया गया.
- शिक्षा में सामाजिक बाधा प्रश्नावली: इसका उद्देश्य विद्यार्थियो में सामाजिक बाधाओं को ज्ञात करना था.

निष्कर्ष: सामाजिक बाधायें

सामाजिक बाधाओं को छ: उपवर्गोमें विभाजित किया गया है जो इस प्रकार हैं:

- स्वास्थ्य समस्या
- आर्थिक समस्या,
- शैक्षिक समस्या,
- पाठ्यक्रम समस्या,
- घर एवं विद्यालय सम्बंधित समस्या,
- प्रतिकूल परिवेश समस्या

परिख़न के आधार पर पाया गया कि

1. ग्रामीण छात्र छात्राओं की शिक्षा पर स्वास्थ्य समस्या का कोई प्रभाव नही है. स्वास्थ्य समस्या के प्रति नगरीय छात्रों का मध्यमान 67.28 तथा छात्राओं का मध्यमान 67.00 पायागया. ग्रामीणछात्र छात्राओ का मध्यमान 62.43 एवम 71.00 पायागया.
2. आर्थिक समस्या का विभिन्न समूहो की शिक्षा पर प्रभाव पढ़ता है. आर्थिक समस्या के प्रति नगरीय छात्रों का मध्यमान 67.57 तथा छात्राओं का मध्यमान 63.00 पायागयाऔरमानकविचलन 14 तथा 12.96 पायागया. ग्रामीणछात्र छात्राओ का मध्यमान 68.71 एवम 66.2 पायागया और मानक विचलन 11.48 तथा 10.78 पाया गया.
3. विभिन्न समूहो के छात्र छात्राओं की शिक्षा पर शैक्षिक समस्या भी प्रभावित करती है. आर्थिक समस्या के प्रति नगरीय छात्रों का मध्यमान 67.57 तथा छात्राओं का मध्यमान 66.00 पायागयाऔरमानकविचलन 15.55 तथा 16.04 पायागया. ग्रामीण छात्र छात्राओ का मध्यमान 64.50 एवम 63.67

पायागयाऔरमानकविचलन 12.04 तथा 0.23 पायागया.

4. पाठ्यक्रम समस्या शिक्षा मैं पूर्णरूप से विभिन्न समूहों के छात्र छात्राओं को प्रभावित करती है. पाठ्यक्रम समस्या के प्रति नगरीय छात्रों का मध्यमान 64.14 तथा छात्राओं का मध्यमान 69.4 पाया गया और मानक विचलन 13.68 तथा 13.34 पाया गया. ग्रामीण छात्र छात्राओं का मध्यमान 13.17 एवम 16.73 पाया गया और क्रांति अनुपात का मान 0.48 पाया गया.
5. विभिन्न समूहोके छात्र छात्राओ घर एवं विद्यालय सम्बंधि समस्या और प्रतिकूल परिवेश भी अपना प्रभाव डालती है. घर एवं विद्यालयसमस्या के प्रति नगरीय छात्र एवमछत्राओ का मध्यमान अनुपात का मान 0.12 पाया गया तथा ग्रामीण छात्र छात्राओ का मध्यमान क्रमश: 63.00 क्रमश: 64.14 एवम 64.60 है.
6. प्रतिकूल परिवेश समस्या के प्रति नगरीय छात्र एवं छत्राओ का मध्यमान मैं सार्थक अंतर नही पाया गया और मानक विचलनक्रमश: 12.17 व 15.87 पाया गया. ग्रामीण छात्र छात्राओ का मध्यमान क्रमश: 60.14 क्रमश: 67.00 एवम 64.60 और मानकविचलन क्रमश: 12.57 व 13.86 पाया गया.

सन्दर्भ

1. बुच,एम. बी. अ सर्वेय औफ रिसर्च इन एदुकेशन केस. बरोदा, 1972.
2. भार्गवा, महेश. मौर्डेन साइकौलौजी टैस्टिंग एंड मेंसुर्मेंट, 1999.